महादेवी वर्मा —

भक्तिकाल में जो स्थान मीरा को प्राप्त था वही छायावाद में महादेवी को प्राप्त है और इसी आधार पर कतिपय विद्वान उन्हें आधुनिक युग की मीरा कहते हैं। यहाँ तक दुःख दर्द और पीड़ा अवसाद का संबंध है वहाँ तक मीरा और महादेवी में विशेष अंतर नहीं है। मीरा का संबंध राजघराने से था और उन्होंने 'मेरो दर्द न जाने कोय' की पुकार लगाई थी। महादेवी का संबंध यद्यपि राजपरिवार से नहीं था किंतु ऐसे संपन्न परिवार में उनका जन्म हुआ था जहाँ सब प्रकार की सुख सुविधाएँ प्राप्त थीं। उन्होंने अपने संबंध में कहा है - "अवगुण कोमल कहाँ तू आ गई परदेशिनी रे।" इस प्रकार वेदना और पीड़ा का संसार दोनों के पास है। अंतर है परिस्थितियों और शिक्षा-दीक्षा का। मीरा रहस्यवादी संतों की परंपरा का संस्कार लेकर आई थी और रैदास जैसे गुरु की कृपा से उन्होंने सहज ज्ञान का प्रकाश प्राप्त किया था। महादेवी बीसवीं सदी के वैज्ञानिक युग में पैदा हुईं जहाँ वह भिक्षुणी भी नहीं बन पाईं। बौद्ध होने की भावना को तो वे पहुँच गई पर उनके नारी स्वाभिमान ने विद्रोह कर दिया। उन्होंने सोचा कि जो नारी से पर्दे की ओट लेकर बात करे वह गुरु कैसे हो सकता है। 'पथ मेरा निर्वाण बन जाता' तथा 'वेदना में जन्म करुणा में मिला आवास' जैसी पंक्तियों के माध्यम से उन्होंने अपने हृदय में ही भगवान बुद्ध की करुणा को प्रतिष्ठित कर लिया। उन्होंने अपनी पीड़ा को जगत को अर्पित कर दी।

मीरा ने अपने को 'गिरिधर गोपाल' के प्रति समर्पित कर दिया था और 'अंसुवन जल सींची-सींची प्रेम बेलि बोई' थी उनका प्रीतम सगुण साकार था, चित्तौड़गढ़ में मीरा का मंदिर उनकी सगुण भक्ति का प्रतीक है। राजरानी मीरा गोकुल से द्वारिका तक अंतः सलिला के रूप में प्राप्त हो गई। महादेवी ने भी असीम के प्रति अर्घ्य को समर्पित किया और आँसू उन्होंने भी कम नहीं बहाए। उनका प्रियतम निर्गुण निराकार है, मीरा की कविता में त्रिकुटी, अनहदनाद, सुरत-निरत, गगन-तिलक, सुषुम्ना की सेज आदि की चर्चा होने पर भी रहस्य भावना गौण है, उनके भावों का प्रेरक गिरिधर नागर कृष्ण है। महादेवी में ऐसे प्रतीक नहीं मिलते क्योंकि आज का युग इन प्रतीकों का युग नहीं है। इसलिए

मध्ये महादेवी में तल्लीनता है और उनकी वेदना अति उत्कटता से युक्त होने पर भी तीव्रता में मीरा से कम है। मीरा की सी भावाभिव्यक्ति महादेवी में नहीं है। महादेवी के विचार और कल्पनाओं का भी मीरा से साम्य नहीं है। मीरा भक्त है और महादेवी रहस्यवादिनी।

मीरा और महादेवी दोनों ही माधुर्य भाव की उपासिका हैं। किंतु मीरा जैसी अनन्य कृष्ण भक्ति, सर्वात्म समर्पण, प्रगाढ़ तन्मयता, अगाध वेदना के दर्शन महादेवी के काव्य में दृष्टिगत नहीं होते। महादेवी सांसारिक आसक्ति का त्यागकर कृष्ण को ही अपने आराध्य का आधार नहीं बना सकीं यद्यपि उनके काव्य में कृष्ण की लीलाओं की प्रतिमा सदा प्रकाशित रही। उनके गीतों में वृंदावन और कालिन्दी की स्मृति सजीव रही। मीरा और महादेवी के अंतर को विश्वम्भर 'मानव' ने इस रूप में दर्शाया है – "मीरा जो अनुभव करती थीं वह कह डालती थीं अतः नारी के हृदय में कितनी आर्द्रता और तड़पन होती है यह बात उनके पदों में पूर्ण रूप से झलक जाती है परंतु ऐसा लगता है कि किसी कारण से महादेवी जी के हृदय में अभी बहुत कुछ जकड़ा है।"

मीरा की उन्मुक्तता और निर्द्वन्द्वता असाधारण है। उनके हृदय में कुछ अव्यक्त नहीं रहता पर महादेवी अपने रहस्य को रहस्य ही बनाए रखने में अपनी वाणी की सार्थकता देखती हैं। महादेवी में दूसरे रूप में ऐसा कुछ है जो मीरा में नहीं मिलता, विचारों और कल्पनाओं की जो स्थिति महादेवी की रचनाओं में लक्षित है, उसे मीरा में नहीं ढूँढा जा सकता। महादेवी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए दिनकर ने लिखा है "कविता में उनका जो रूप प्रकट हुआ है वह तपस्विनी का रूप है किंतु शिक्षा के क्षेत्र में वे कर्मठता की मूर्ति रही हैं। प्रवृत्ति उनकी बाहरी जीवन में है और भीतर से वे निवृत्ति में लीन हैं। यह स्थिति लगभग संत की स्थिति थी। यद्यपि महादेवी जी कभी आध्यात्मिक साधना के चक्कर में पड़ी हैं या नहीं इसमें संदेह है। आज तक मेरी दृष्टि में महादेवी जी का व्याकुल संन्यासिनी का ही प्रधान रूप है।"

महादेवी का हृदय प्रतिक्षण किसी अज्ञात का अनुमान करता रहा। वह सर्वदा उसकी खोज में लीन रहीं। वह सर्वदा शून्यता का अनुभव करती रहीं। उस सूनेपन में भी वह प्राणों की बाती का दीपक जलाकर दीवाली मनाती रहीं – "इस सूनेपन की मैं हूँ रानी मतवाली, प्राणों का दीप जलाकर करती रहती दीवाली।"

महादेवी ने दुःख को सुख से अधिक महत्व दिया है। उनका विश्वास था कि दुःख ही मानव मात्र को परस्पर निकट लाने का साधन है। उनके अनुसार "दुःख, मेरे निकट जीवन का ऐसा काव्य है जो सारे संसार को एक सूत्र में बाँधे रखने की क्षमता रखता है। हमारे असंख्य सुख हों चाहे मनुष्यता की पहली सीढ़ी तक भी न पहुँचा सकें किन्तु हमारा एक बूँद आँसू भी जीवन को अधिक मधुर, अधिक उर्वर किए बिना नहीं गिर सकता। मनुष्य को सुख अकेला भोगना चाहता है परन्तु दुःख सबको बाँटकर विश्वजीवन में अपने जीवन को, विश्ववेदना में अपनी वेदना को इस प्रकार मिला देता है जिस प्रकार एक जलबिन्दु समुद्र में मिल जाता है," कवि का गीत 'नीहार' और 'रश्मि' में करुणा यही दुःखवाद तीव्र रूप में प्रकट हुआ है। महादेवी के दुःखवाद को किसी कामकुंठा की प्रतिक्रिया या परिणाम मानना उचित नहीं। उनकी दुःखमूलक वेदना बौद्ध दर्शन की करुणा से अधिक प्रभावित है। उन्हें यह इसलिए भी प्रिय थी क्योंकि वह मनुष्य के संवेदनशील हृदय को सारे संसार से एक अविच्छिन्न बंधन में बाँधने की शक्ति है। कवयित्री ने उसे विश्वव्यापी, सार्वभौम और शाश्वत तत्व का रूप दिया है। उसे दार्शनिक और आध्यात्मिक बना दिया है। उनकी वेदना में सांसारिकता या दैहिकता नहीं। वे अपने अन्तर में सुख दुःख दोनों तत्वों को समाहित करती हैं।

मीरा के विषय में ऐसी मान्यता है कि उनका झुकाव भक्ति की ओर बाल्या से ही था। उन्होंने बचपन में ही खेल ही खेल में गिरिधर की मूर्ति को अपना मान लिया था। विवाह के बाद भी वह मेरे गिरधर का प्रेम उनमें बना रहा। स्वामी का दाम्पत्य जीवन अधिक सुखी नहीं रह सका। २० वर्ष की अवस्था में वैधव्य का दुःख भी झेलना पड़ा। पति की मृत्यु के पश्चात तिल-तिलकर जलना उस समय के समाज में नारी के जीवन की विवशता बन जाती थी। मीरा के हृदय इन सामाजिक झूठे बन्धनों के प्रति विद्रोह तिरस्कार का भाव था। इसीलिए उन्होंने अपनी भावनाओं को भक्ति का जामा पहना दिया। गिरिधर के रूप में प्रेम के नित्य अनन्त रूप के प्रति मीरा समर्पित हुई उससे बढ़कर भी कोई नहीं। उन्होंने जीवन में असीम दुःख झेला। राणा विक्रमाजीत द्वारा भेजा गया विष का प्याला भी उनके लिए अमृत हो गया। जीवन की वास्तविक वेदना ही उनकी कविताओं में प्रिय से वियोग की पीड़ा के रूप में ढल गई।[4] 'हेरि मैं तो प्रेम दीवानी, मेरो दर्द न जाने कोय।'

~~स्थूली ऊपर~~

इस प्रकार मीरा के पदों में विरह की पीड़ा का ही बड़ा ही करुण चित्रण है।

महादेवी आधुनिक काव्य की छायावादी काव्यधारा की प्रमुख कवयित्री थीं। उन्होंने अपने विवेचनात्मक गद्य में छायावाद को जागरण युग की सृष्टि और उसके माध्यम को लौकिक तथा व्यक्तिगत अभिव्यक्ति से भिन्न स्वीकार किया है। उन्होंने यह भी माना कि अखिल सूक्ष्म को छायावाद ने अभिव्यक्ति प्रदान की वह स्थूल से बाहर कहीं अस्तित्व ही नहीं रखता। मनुष्य का अनंत सत्य ही स्थूल है और अव्यक्त सत्य सूक्ष्म। इस प्रकार सूक्ष्म स्थूल का ही दूसरा रूप है। छायावाद आधुनिक, पौराणिक, धार्मिक चेतना के विरुद्ध आधुनिक लौकिक चेतना का विद्रोह था।

मीराबाई की साधना का स्वरूप भारतीय भक्ति मार्ग के अनुरूप है, उनकी भक्ति में सगुण और निर्गुण दोनों का समन्वित रूप दृष्टिगत होता है। विरह की अभिव्यक्ति विदेशी सूफी सम्प्रदाय से प्रभावित मानी जा सकती है। जीवन के कठिन अनुभव भी उनकी कविताओं में व्यक्त हुए हैं। स्वानुभूति की निवृत्ति मीरा के काव्य का चरमोत्कर्ष है। भक्ति मीरा के अंतर की सहज प्रेरणा थी। किसी आरोपित सिद्धांत की स्वीकृति नहीं। मीरा को अपने आरंभिक जीवन में संत रैदास का शिष्यत्व ग्रहण करने का सुयोग मिला था। किन्तु मीरा अपने आराध्य को निर्गुण रूप में स्वीकार नहीं कर पाईं। अपने इष्टदेव कृष्ण के रूप सौंदर्य और उनकी लीलाओं का गुणगान इन्होंने निःसंकुल कृष्ण भक्त कवियों की शैली में किया। नारी होने के कारण इनके माधुर्य भाव के पदों में अनुभूति की तीव्रता अधिक है। इसी कारण वह कहती हैं – "मैं गिरिधर आगे नाचूँगी, नाच-नाच पिय रसिक रिझाऊँ, प्रेमी जन को जाँचूँगी।"

महादेवी अतृप्ति को ही जीवन मानती रहीं, उनका काव्य भक्ति सोपान और आलम्बित है। जहाँ तक रहस्य भावना का संबंध है यूरोपीय प्रतीकवाद का प्रभाव महादेवी की कविताओं में मिलता है। अतः उनका रहस्यवाद यूरोपीय प्रतीकवादी शैली में अभिव्यक्त हुआ है। डा० रामेश्वर वर्मा ने महादेवी और मीरा की तुलना करते हुए लिखा है – "छायावादी कवियों में केवल महादेवी को मीरा की तुलना में सगुणकार भक्त कवियों की कोटि तक पहुँचाया जा सकता है। परंतु मीरा की आध्यात्मिक साधना की यथार्थता जहाँ असंदिग्ध मानी जाती है वहाँ महादेवी की साधना काव्य में सीमित दिखाई देती है।